Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 1

# एहसास

मोही नैय्यर

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 1

# समर्पण

विवाह की रजत जयन्ती के शुभावसर,
23 मई, 1995, को पत्नी प्रभा को
आदर एवं प्रेम सहित समर्पित.....

तेरे जल्वों सी कोई कायनात नहीं
जो तुझ में है, वो किसी में बात नहीं
यूं तो मिले हैं जहां में हमसफर सब को
मगर जहां में तुझसी शरीक-ए-हयात नहीं

मोही नैय्यर

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 2

# आभार

ज़िंदगी के सफ़र में कौन कितनी दूर तक साथ चला था किसी ने कितना साथ निभाया? सब ऐसे सवाल हैं जो परेशानी का बाईस बन जाते हैं. अहम् बात ये है कि हमने किसी के साथ चलते-चलते या किसी के साथ रह कर उसकी अच्छाईयों में से क्या हासिल किया. साथ देने वाला हमेशा कुछ न कुछ दे जाता है. हम उसे ले पाते हैं या नहीं यह हमारे उपर निर्भर करता है। कभी-कभी एक पल का साथ भी ज़िंदगी को मंज़िल का पता दे जाता है. तो कभी ज़िंदगी भर का साथ ज़िंदगी को राहों में भटकाता रहता है. मैं अपने को खुश क़िस्मत समझता हूं कि मुझे अपनों और ग़ैरों से हमेशा कुछ न कुछ मिलता ही रहा है. मैं किसी से अपने दुःख और मुश्किलों के लिए शिकवा नहीं कर सकता. किसी भी दर्द के लिए कोई गिला नहीं कर सकता. दुःख, दर्द, और मुश्किलें तो रुहानी नेहमतें हैं जो मुझे इंसान होने का एहसास दिला कर मेरे साथ साथ चलती रहती हैं. मैं इनका और इनके देने वालों का बहुत आभारी हूं. जिस के साथ ने मुझे सुख दिया उसका आभार में जन्मों तक नहीं चुका सकता. सुख का एहसास एक नशा है जो उतर जाता है मगर देने वाले का एहसान बनकर जन्मों तलक साथ साथ चलता रहता है.

मेरी क़लम को जिस सुख, दुःख, दर्द, और मुश्किल ने रवानी दी उन सबका मैं आभारी हूं. जाने और अनजाने में मिले हर साथ का कर्ज़ दार हूं. मेरी ज़िंदगी का हर एहसास उन लम्हों का मुहताज है जब दिल, दर्द, और रूह की जुस्तुजू रूबाईयों की शक्ल में कागज़ पर उतर आई. वक्त की मेहरबानियां मेरे लिए क्या हैं बस दिल जानता है. मैं ज़िंदगी का आभारी हूं. उन सांसों का शुक्र गुजार हूं जिनके कांधे पर बैठ कर मैं कुछ लिख पाया. आने वाली सांसों के लिए मैं यही

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 3

दुआ करता हूं कि मुझ से कुछ करवाएं..... जारी सांसों का आभार कभी चुका नहीं पाऊंगा.

अन्त में मेरे खून में समाई अपनों के खून की लाली और बलिदान की भावना की गर्मी जिस एहसास को जन्म देती है, वो शायद इस संसार में दुर्लभ है. अपने भाग्य को सराहता हुआ मैं सदैव उन सबका आभारी हूं.

सदैव आभारी,
मोही नैय्यर

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 4

# एहसास

इंसान का ईमान और इंसान का ज़मीर ज़िन्दगी के सफ़र में कभी जागता है तो कभी सोता है, कभी पुकारता है तो कभी ख़ामोश रहता है, कभी बिकता तो कभी ख़रीदा जाता है, कभी झूठ के कफ़न में ज़िन्दा दफ़न कर दिया जाता है तो कभी जीने की तमन्ना लिए सच्चाई का दामन पकड़े दम तोड़ देता है. इंसान का जिस्मानी वजूद तो मिट जाता है मगर उसके ईमान और ज़मीर की रुहें पैरहन लपेटे क़बरों में से निकल कर निगाहों में तैरने लगती हैं. जब वो रुहें इंसान को देखती हैं, तो उन्हें ऐसा लगता है कि इंसान का ईमान और ज़मीर दिन पर दिन मरता जा रहा है. इंसान अपनी ख़्वाहिशों के लिए कितना गिर गया और गिरता जा रहा है. १९८४ में अगस्त के महीने में मुझे फ्लोरिडा जाने का अवसर मिला. शाम के समय मैं अपने होटल के कमरे में बैठा खिड़की से देख रहा था. ज़ोर की बारिश हो रही थी. सामने सड़क के पार कब्रिस्तान था. ऐसा लगा कि बीते हुए कल की अज़ीम तरीन हस्तियों की रुहें उस कब्रिस्तान से निकल कर आज की दुनिया का मुआईना कर रही हैं. क़दम क़दम पर उन्हें इंसान के ईमान और ज़मीर की गिरावट की तस्वीरें नज़र आती हैं. मेरे ख़्यालों की तेज़ रफ़्तारी में उनकी ज़िन्दगी का सफ़र अपनी ज़िन्दगी के सफ़र के साथ एक पल में तय हो गया. इस सफ़र का एहसास कलम के अश्कों ने यूं बयां किया.....

**ज़िन्दगी का सफर यूं भी गुज़रेगा, हमें एहसास न था.**
**हसरतों का चमन यूं भी उजड़ेगा, हमें एहसास न था**
**जिस्मानी वजूद की दुनिया में रुहें तड़प के कहती हैं**
**आज का इंसान यूं भी बदलेगा, हमें एहसास न था**

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 5

ज़िन्दगी के आग़ाज़ को लेकर मेरे लड़खड़ाते क़दम जवानी में बहके तो एक दीवानगी का एहसास हुआ. सन् 1965 में जब पहली बार मुंबई गया तो समुन्द्र की लहरों को देखकर दिल कह उठा.....

**लहरों का साहिल से टकराना**
**मुझको दीवाना बना देता है**

ज़िन्दगी के सफ़र में कभी-कभी चन्द लम्हे ऐसे हमराह बनते हैं कि उठाया हुआ पहला क़दम मंज़िल का एहसास दिलाता है. ऐसे लगता है कि इसके परे कुछ भी नहीं. जवानी की वादियों में हुस्न के नज़ारे नज़रों को मदहोश कर देते हैं. लबों से आबे-हयात छलकता है और निगाहों में मैख़ाने लड़खड़ाते हैं. आरिज़ की लाली ज़िन्दगी को गुलाबी बना देती है. ऐसा लगता है कि ज़िन्दगी इसी एहसास का नाम है. इश्क़ की इब्तिदा का मज़ा ख़रामा ख़रामा वफ़ा के फ़रेब में इश्क की इन्तिहा का एहसास दिलाता है.

कभी-कभी ज़िन्दगी खुदपरस्ती की बोतल बन जाती है और उस में बंद ज़िन्दगी जफ़ा का ज़हर. जब इंसान जफ़ा के ज़हर की बूंदें औरों के पैमानों में उंडेलता है तो उसके क़दम गुनाहों की राह पर ऐसे चलते हैं जैसे समुन्द्र के साहिल पर समुन्द्र की लहरें. एहसास होता है कि इंसान की गुनाह करने की आदत लहरों सी दीवानी हैं. गुनाहों की भीड़ ज़िंदगी के ख़ता होने का एहसास दिलाती है और हर सांस सज़ा बन जाती है. तब इंसान का ईमान ज़मीर को ललकारता है. एक अजब बेबसी का एहसास होता है. ज़ुबां जो अक्सर बड़ी बड़ी बातें करती रहती है, ख़ामोश रह जाती है. ज़हन कुछ सोच नहीं पाता. बेबसी, बेकसी, लाचारी, और मजबूरी की ज़ंजीरों में जकड़ा इंसान कसमसा कर अन्दर ही अन्दर तड़प उठता है. मगर आह भी नहीं भर सकता. ऐसा लगता है कि बेज़ुबानी ही सबसे बेहतर है. कलम की नोक लिख देती है... ज़िन्दगानी एक एहसास का नाम है.

जवानी के आग़ोश में आरज़ूओं के चमन खिलने से पहले ही मिट जाते हैं. ख़्वाबों के महल ख़्वाबों में ही मिट जाते हैं. मिलन के अरमानों के गुल तन्हाईयों के सहरा में ऐसे मिट जाते हैं जैसे रेत के महल.

उम्मीदों के चिराग़ जलते रहते हैं और जलते जलते एक उम्र जला देते हैं. तन्हा रात में जब कोई सितारा टूटता है तो किसी के वादों का गुमां होता है. तन्हाई इतनी भाती है कि दिल कह उठता है..... तेरी याद हो तो कोई भी मेरे पास न हो. फिर किसी का तो क्या अपना भी एहसास न हो....।

यादों की गोद में ज़िंदगी का सफ़र जारी था. मां, बाप, भाई, बहन, दोस्त, जाने और अनजाने कभी साथ चलते तो कभी किसी मोड़ पर साथ छोड़ जाते. ऐसे ऐसे मंज़र नज़र आते कि कभी अश्क बहने लगते तो कभी लब मुस्कुराते, कभी आंखें शर्म से झुक जातीं तो कभी सर फ़ख से तन जाता. कभी छुप-छुप के बिताए लम्हे डराते तो कभी इंसान के ईमान और ज़मीर के मर जाने की याद दिलाते.कभी किसी से शिकवा, कभी किसी से गिला कभी किसी को कुछ दिया, कभी कुछ मिला..... आख़िर एहसास होता ..... है

**शिकवा किसी से क्या, किसी से क्या गिला**
**हंस कर क़बूल कर जिससे भी जो मिला**
**तू चाहे या न चाहे, माने या न माने**
**चलता रहेगा यूं ही दुनिया का सिलसिला**

ज़िन्दगी के सफ़र में जहां ग़मों के हुजूम हैं तो वहीं खुशियों के मेले हैं. जहां इश्क़ का जुनूं है तो वहीं हुस्न की रंगीनियां. जहां जफ़ा की साज़िशें हैं तो वहीं वफ़ा की कुरबानियां. जहां यार की महफ़िलें हैं तो वही उसकी यादों में लिपटी तन्हाईयां. जहां वस्ल में लरज़ती अंगड़ाईयां है तो वहीं हिज्र में तड़पती परछाईयां, वक़्त के साथ-साथ हर चीज़ बदलती जाती है मगर उसकी रूह नहीं बदलती. राहें

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 7

नहीं बदलती, मुसाफिर बदलते रहते हैं..... वफाएं नहीं बदलती, क़ाफ़िर बदलते रहते हैं. इंसान बदल जाते हैं.... मगर उसके एहसास नहीं बदलते. एहसास को ज़िंदा रखते हैं इंसान का ईमान और ज़मीर. जब ईमान और ज़मीर मर जाते हैं तो इंसान के एहसास करने की ताक़त के साथ उसका एहसास भी मर जाता है.

मेरे चंद एहसास इन रूबाइयों की शक़्ल में आपके सामने पेश हैं. अगर यह एहसास आपके ईमान और ज़मीर को छू जाए तो मेरी खुश क़िस्मती, वरना मेरे एहसास की गुस्ताख़ी और इस के बयान की बदगुमानी आप नज़र अंदाज़ करके मुझ नादां पर करम फरमायें, नवाज़िश होगी.

करम और नसीहत का तलबगार.....

**मोही नैय्यर**

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 8

## मोही नैय्यर

मोही नैय्यर एक ऐसे शायर का नाम है जिसकी पहचान व़क्त के साथ-साथ उसी तरह बढ़ेगी और बढ़ती जाएगी जिस तरह सूरज की रोशनी और चांद की चांदनी की चमक धीरे-धीरे बादल छट जाने पर बढ़ती जाती है, खुद मोही नैय्यर का कहना है....

**ज़िन्दा रहते कोई न जाने**
**मौत के बाद सब पहचाने**
**कोई क्या बतलायेगा, हम**
**अपना नसीबा खुद ही जाने**

सन् १९८३ में जब मोही नैय्यर की रुबाईयों का पहला संग्रह 'घटाएं' छप रहा था तब प्रेस में शायरी के एक शौक़ीन सज्जन ने रुबाईयां पढ़कर ये कहा, 'एक एक रुबाई क़माल की है. इस संग्रह की रुबाईयां चुनने वाले ने तो सच में कमाल ही कर दिया मगर एक ही कमी रह गई. कितना अच्छा होता अगर हरेक रुबाई के नीचे लिखने वाले शायर का नाम लिखा होता. पढ़ने वाले को ये तो पता चल जाता कि रुबाई मीर की है, ग़ालिब की है, या फिराक़ या ज़िगर या आज़ाद ने लिखी है'

किसी महफ़िल में रुबाईयां सुनाने के बाद मोही को अक्सर सुनने को मिलता है.... ''रुबाईयां सुनकर मज़ा आ गया'',

''ये किसकी लिखी रुबाईयां हैं'', ''क्या ये आपने लिखी हैं'' मोही ये सब सुनकर बस धीमे से मुस्करा देता है. उसका कहना है कि ऐसी दाद किसे मिलती है. मेरे लिए इससे बढ़कर दाद नहीं हो सकती.

ऐसा कहा जाता है कि उमर ख़य्याम के जीवन काल में ये कोई नहीं जानता था कि वो एक शायर है. आज रुबाई का दूसरा नाम

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 9

उमर ख़य्याम है. कुछ हद तक ये बात मोही नैय्यर के बारे में कही जा सकती है. मोही नैय्यर तक़नीकी क्षेत्र में अपनी कलम से एक विश्व विख्यात इंज़ीनियर हैं, मगर कोई ये सपने में भी नहीं सोच सकता कि मोही नैय्यर एक कवि है, शायर है.

एक तरफ ज़िन्दगी के जाम में खुद्दारी की मय पीने वाला ये इंसान हिम्मत की चट्टान है, दूसरी तरफ उसका दिल दर्द की दल दल है. कहीं अनजान लब कह उठते हैं, ''मोही की रूबाईयों में सात जन्मों का दर्द है''. वक्त की राह में ऊसूलों का राग अलापने वाले इस शायर को ज़माने की खुदपरस्ती कभी कायल न कर सकी. दिल का सूनापन जीवन को सूना न कर सका. उसकी रूबाईयों की वाह वाह महफ़िलों को रंगीन बना देती है. उसकी ज़िन्दगी की ज़िन्दादिली एक मिसाल है. जो मोही नैय्यर के जीने के ढंग से वाक़िफ हैं, कह उठते हैं, ''काश! हम भी ऐसे जीना सीख पाते''.

क्या ग्यारहवीं सदी के उमर ख़य्याम की तरह रूबाईयों का फ़कीर मोही नैय्यर आने वाली सदियों का उमर ख़य्याम बन पायेगा इस सवाल का जवाब वक्त की किताब में मिलेगा.

**एक परिचित!**

शायरी शख़्सीयत का आईना होती है और किसी की शख़्सीयत का अन्दाज़ा उसकी शायरी से किया जाता है. मोही नैय्यर की मनफ़रिद शायरी का तर्ज़े-इज़हार और फितरी सलाहियत् की मिसाल उनके इस संग्रह में है.

**फिरोज़ा सलाहुद्दीन**

मोही नैय्यर का कलाम अमरीका के अदबी हल्कों में किसी तारीफ का मोहताज नहीं. ना सिर्फ ये कि खूबसूरत रुबाईयां लिखते हैं बल्कि ताज़ा लम्हें में बड़ी पुख़्ता गज़लकारी करते हैं. उनकी शायरी मौजूदा तौर का बिगड़ते, संवरते हालात की अक्कासी करती है.

**मोना शहाब**

शायरी, रुबाई, नज़्म हो या ग़ज़ल, शायर के ख़्याल की तर्जुमान होती है. मोही नैय्यर की शायरी उनकी ख़ूब सूरत शख़्सीयत का आईनादार है.

**शोएब शाह**

एक प्रसिद्ध इंजीनियर और बहुत अच्छे शायर मोही नैय्यर हर काम बड़ी लग्न से करते हैं. शादी की पच्चीसवीं वर्ष गांठ पर यह प्रस्तुति इसका सबूत है.

**दिनेश गुप्ता**

''एहसास'' मोही नैय्यर की उम्दा और बेहतरीन शायरी की बेमिसाल पेशकश है. भारत और विदेशों में शायरी के शौक़ीन लुत्फ़ अंदोज़ होंगे और वाह वाह करेंगे.

**रीटा बख्शी**

मोही नैय्यर मुस्कराहटों के साथ अपने ज़ख्मों को छुपाते हुए सादा लौह ज़ुबान से मुख़्तसर अल्फाज़ों में पूरी तस्वीर पढ़ने वाले के सामने पेश करते हैं. कश्ती में बिठाकर समन्दर की गहराई का एहसास दिलाना मोही नैय्यर का कमाल है.

**मोहम्मद नज़ीर बोहरा**

मोही नैय्यर की इनायत का मशकूर हूं. उनके कलमी नुस्ख़े ''एहसास'' को पढ़कर मुस्तफ़ीज़ हुआ-बहुत पसंद आया. मोही नैय्यर ने जज़बात और एहसासात को निहायत खूबी से कलमबंद किया है. पढ़ने वाले लुत्फ़-अंदोज होंगे.

**डॉ. सईद कुरैशी**

अमरीका के मैटीरियालिस्टिक माहौल में लिखी गई मोही नैय्यर साहेब की लेटेस्ट पेशकश ''एहसास'' अमावस की रात में सुबह की पहली किरण की तरह इंसानियत के उन पुर सुकून लम्हों की निशान दही कराती है जिनसे ज़िन्दगी तकमील पाती है.

**जगदीश चन्द्र नारंग**

मोही नैय्यर एक भावुक, सरल हृदय मगर ज़िन्दादिल शायर, जो अपनी शायरी में ज़िन्दगी के कई पहलुओं को, जैसे आशा और निराशा, ग़म और खुशी, मोहब्बत और बेवफ़ाई, हंसी और आंसू- इन सबको इस खूबी से चंद शब्दों में चुनते हैं जैसे एक शिल्पकार पत्थर की मूर्ति को धैर्य व लग्न से तराशता है.

**निर्मल एवं कैलाश गुप्ता**

मोही नैय्यर जी को मैं पिछले १५ वर्षों से जानता हूं. आप भारत के एक मान्य परिवार से संबंध रखते हैं. मोही जी अमरीका की एक विश्वविख्यात कंपनी में एक इंजीनियरिंग विशेषज्ञ के पद पर काम करते है. आपके द्वारा रचित इंजीनियरिंग मान्य ग्रंथ सारे विश्व में प्रयोग होते हैं. मिलने पर कई विषयों पर बातचीत हुआ करती थी लेकिन जब मुझे पता चला कि आप एक अच्छे कवि भी हैं तो मेरे आग्रह

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 12

करने पर आपने अपनी पहली पुस्तक ''घटाएं'' मुझे दी. सच मानो पढ़ने पर ऐसा लगा कि आप तो छुपे रुस्तम निकले.

रूबाईयां पढ़कर ऐसा लगता है कि मुशायरे में बैठे हैं और मोही नैय्यर अपना कलाम सुना रहे हैं. बार-बार वाह वाह, एक बार फिर, एक बार फिर, बहुत खूब की आवाज़ें आ रही हैं.

मोही नैय्यर की अगली पुस्तक ''एहसास'' इंसान के एहसासात का अक्स है. अगर इंसान एक दूसरे के दुःख सुख का एहसास कर सके तो दुनियां के सारे झगड़े समाप्त हो जायें.

मोही जी के लिए मंगलमय भगवान से हार्दिक मनोकामना करता हूं. दीर्घायु हों. यशस्वी हों. ''एहसास'' एक लोकप्रिय पुस्तक बनें.

**बृजलाल वर्मा**

मोही नैय्यर वो शायर हैं जो सिर्फ़ शेर लिखते ही नहीं, शेर का दिल भी रखते हैं.

**रणबीर खरे**

हम बड़े खुशक़िस्मत हैं। हक़ीकत तो ये है कि मोही नैय्यर की शायरी ने हमें मोहब्बत और दोस्ती का एहसास कराया. इनकी शायरी में चाह, दर्द और तड़प की कोई सीमा नहीं.

**श्री आयंगर**

मोही नैय्यर ''कमाल है! एक इंजीनियर और शायरी'' मोही की शायरी मुझे अपने पुराने लखनऊ की याद दिलाती है.

**लक्ष्मी सम्पत**

ज़िंदगी का सफ़र यूं भी गुज़रेगा, हमें एहसास[1] न था
हसरतों का चमन यूं भी उजड़ेगा, हमें एहसास न था
जिस्मानी[2] वुजूद[3] की दुनिया में रुहें[4] तड़प के कहती हैं
आज का इन्सान यूं भी बदलेगा, हमें एहसास न था

इब्तिदा-ए-इश्क़[5] को मज़ा कहते हैं
इन्तिहा-ए-इश्क़[6] को फ़ना[7] कहते हैं
जिसके फ़रेब[8] में मिट जाते हैं आशिक़[9]
उस बला-ए-इश्क़[10] को वफ़ा[11] कहते हैं

1. अनुभूति 2. भौतिक 3. अस्तित्व 4. आत्माएं 5. प्रेम का आरंभ 6. प्रेम की चरम सीमा 7. तबाही, अंत 8. धोखा 9. प्रेम करने वाले 10. प्रेम की आफत 11. निष्ठा

तेरे लबों[1] से आबे-हयात[2] पी गया, मुझ को यकीं नहीं
दो पल मैं ख़्वाब की मानिंद[3] जी गया, मुझ को यकीं नहीं
आलमे-मस्ती[4] में मदहोश[5] हुआ कहता है मेरा दिल
मैं आज तलक तेरे बग़ैर जी गया, मुझ को यक़ीं नहीं

नज़र में तू है, नज़ारों में तू हैं
चमन[6] में तू है, बहारों में तू है
तस्कीं[7] का हर पहलू[8] एहसास[9] है तेरा
सुकूं[10] में तू है, क़रारों[11] में तू है

1. होंट 2. अमृत 3. तरह 4. मसती की दुनिया 5. मदमस्त 6. बाग 7. आश्वासन 8. तरफ, ढंग, दिशा 9. अनुभूति 10. शांति 11. विश्वास, धीरता, चैन

तन्हा[1] लम्हे[2] बस तकते हैं तेरी राहें
वीरां शामें भरती हैं आहों पे आहें
अब तो आजा, और आके तू लग जा गले
मर जायेंगी यूं ही वरना मेरी चाहें

तू है तो मेरे तस्सुवर[3] में यकीं[4] है
तेरा हर ख़्याल तेरी तरह हसीं[5] है
तू लरज़ती[6] है जब आग़ोश[7] में मेरे
झूमे है आसमां[8], जन्नत[9] ये ज़मीं[10] है

1. एकाकी 2. क्षण 3. विचार 4. विश्वास 5. सुंदर 6. लहराती, बलखाती 7. आलिंगन 8. आकाश 9. स्वर्ग 10. धरती

खींचती है कोई कशिश[1] बार-बार क्यों
चीरती है कोई कसक बार-बार क्यों
रह-रह के पूछता है मेरा बेताब दिल
उठ रही है कोई तलब[2] बार बार क्यों

इश्क़[3] इबादत[4] है ख़ामोश किए जा
ये हुस्न[5] नशा है, मदहोश[6] पिए जा
जुर्मे-मुहब्बत[7] का अंजाम[8] है ये
इल्ज़ाम[9] लिए जा, दुआएं[10] दिए जा

1. आकर्षण 2. इच्छा 3. प्रेम 4. पूजा 5. सौन्दर्य 6. मदमस्त 7. प्रेम का अपराध
8. परिणाम 9. दोष 10. प्रार्थनाएं, शुभकामनाएं

हुस्न[1] इश्क़[2] से बोला तेरा गरुर[3] क्या है
ये जुस्तुजू[4], ये जुनूं[5], ये सरुर[6] क्या है
अंजाम[7] से वाक़िफ[8] वफ़ा[9] की राहों में
इश्क़[10] तड़प के बोला मेरा कसूर क्या है

लबों[11] में शीरीं[12], आंखों में मैख़ाने[13]
दहकते[14] आरिज़[15] पे लरज़ते[16] पैमाने[17]
न जाने कौन पी पी के बहक गया
हम तो बिन पीए ही तेरे दीवाने[18]

1. सुंदरता 2. प्रेम 3. अभिमान 4. तलाश 5. उन्माद 6. नशा 7. परिणाम 8. परिचित 9. निष्ठा 10. प्रेम, प्रेमी 11. होंठ 12. मिठास 13. मदिरालय 14. सुलगते 15. गाल 16. छलकते 17. शराब के प्याले 18. प्रेमी

इश्क़ खुदा है, इंसानी जुनूं[1] है
हुस्न नशा है, रुमानी[2] सुबू[3] है
जिस्मानी वुजूद[4] की दुनिया में
वस्ल[5] मज़ा[6] है, रुहानी[7] सुकूं[8] है

तू है आस-पास, ये यक़ीं[9] नहीं होता
हूं उदास फिर भी, ये यकीं नहीं होता
मेरी ज़िंदगी भी चैन से कट जाती
गर मैं जवां[10] और तू हसीं[11] नहीं होता

1. उन्माद 2. प्रेम सम्बन्धी 3. शराब की सुराही 4. अस्तित्व 5. मिलन 6. आनन्द
7. आध्यात्मिक 8. शांति 9. विश्वास 10. जवान 11. सुन्दर

दिल ने यह पूछा, क़रार[1] किसको कहते हैं
दीद ने पूछा, दीदार[2] किसको कहते हैं
सारी ज़िंदगी जिसके इन्तज़ार[3] में कटी
उसी ने पूछा, इन्तज़ार किसको कहते हैं

प्यार तेरी रानाईयों[4] की मस्ती[5] है
खुमार तेरी अंगड़ाईयों की हस्ती[6] है
तेरे साथ गुज़ारे चंद लम्हों[7] की याद
मुझ को मेरी तन्हाईयों[8] में डसती है

1. चैन 2. दर्शन 3. प्रतीक्षा 4. सौन्दर्य 5. आनन्द 6. अस्तित्व 7. क्षणों 8. एकाकी-पन

रुसवाई[1] के आलम में इरादों ने रुलाया
तन्हाई[2] के आलम में यादों ने रुलाया
ग़रज़ ये कि ता-उम्र अश्क़[3] यूं ही बहते रहे
शहनाई के आलम में वादों ने रुलाया

चमन[4] से निकला बस ख़ार[5] ही ख़ार लिए
वीरां[6] में भटका आरज़ू-ए-बहार[7] लिए
तेरे वस्ल[8] को तरस गई ये आंखें मेरी
मैं हिज्र[9] में तड़पा तेरा ख़्याल लिए

1. अपमान 2. अकेलापन 3. आंसू 4. बाग 5. कांटा 6. सुनसान 7. बहार की इच्छा 8. मिलन 9. विरह

ज़माने ने हसरतों[1] पे पहरा बिठा दिया
अपनों ने नफ़रतों को गहरा बना दिया
ग़मों की धूप और तिशना-ए-इश्क़[2] ने
मेरी ज़िंदगी को सहरा[3] बना दिया

तु सुकूने-दिल[4] है जहां का अलम[5] तो नहीं
खुदा का करम है तू अदाए-सित्म[6] तो नहीं
ख़्यालों में साथ तेरे गुज़ारी है ज़िंदगी
तू महज़ हक़ीक़त[7] है कोई वहम[8] तो नहीं

1. इच्छाएं 2. प्रेम की प्यास 3. मरुस्थल 4. दिल का चैन 5. दुख 6. अत्याचारी अदा
7. वास्तविकता 8. भ्रम

ज़िंदगी में ज़िंदगी का एहसास[1] इक़ ख़्वाब रहा
मैं रहा ज़मीं[2] का ज़र्रा[3], तू अब्र[4] का आफ़ताब[5] रहा
ख़्वाबों में ही मिट गई मेरे ख़्वाबों की तामीरें[6]
पर यह हक़ीक़त[7] है कि तेरा ख़्वाब इक़ ख़्वाब रहा

उम्रे-दराज़[8] है, चली जाएगी तक़रार[9] न कर
दो पल बहार है, चली जाएगी इन्तज़ार[10] न कर
अगरचे मिलना है तो मिल, कोई वादा[11] न कर
मौजे जवानी है, चली जाएगी इन्कार[12] न कर

1. अनुभूति 2. धरती 3. कण 4. आसमान 5. सूरज 6. रचनाएं 7. वास्तविकता
8. लम्बी आयु 9. कुर्तक 10. प्रतीक्षा 11. वचन 12. अस्वीकार

जहां से चला जाऊंगा मैं चंद[1] सपने लिए
बहुत चाहा मगर कुछ न हुआ अपने लिए
हर इक़ कोशिश मेरी बन जाती है गुनाह
मैं जब भी ढूंढता हूं यहां कुछ अपने लिए

ज़मीं[2] पे तेरा आगाज़[3] एक अजब[4] बात है
और भी हैं हसीं[5], तेरी अलग[6] बात है
मैं तो खो गया था दुनिया के रंगीं मेले में
तुझसे मिलना ही ज़िन्दगी से मुलाकात[7] है

1. कुछ 2. धरती 3. आना, जन्म, प्रारंभ 4. आश्चर्यजनक 5. सुन्दरियां 6. निराली 7. भेंट, मिलन

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 24

हम चले मंज़िल की जानिब[1] और मंज़िल खो गई
दिल जले शमां की मानिन्द[2] और महफ़िल[3] सो गई
ग़रज़ ये कि हम जब भी चले सुकूं[4] की तलाश में
ग़म मिले यारो की मानिन्द और मर्सरत[5] खो गई

ख़्यालों ही ख़्यालों में हमने बनाया था आशियां[6]
राहे-इश्क़[7] में देखे नहीं दिलबर के क़दमों के निशां[8]
जलाया आशियां, मिटा डाले निशां, गिरा के बिजलियां
ए आसमां[9]! तू ही बता क्या ये थी हमारी दासतां[10]

1. ओर 2. तरह 3. सभा 4. शान्ति 5. प्रसन्नता 6. घर, घरौंदा 7. प्रेम की राह 8. चिन्ह 9. भगवान, ऊपर वाला 10. कहानी

चिराग़-ए-उम्मीदां[1] ने इक़ उम्र जला दी है
आरज़ू-ए-दीदां[2] ने हर शमां बुझा दी है
बिछुड़ने से पहले कभी मिल भी न पाए
ए कातिबे-नसीबां[3] ये कैसी सज़ा दी है

ए हसीनों[4] के हसीं[5], तू हुस्ने-जहां[6] है
तू खुद ही नहीं, तुझ से दुनिया जवां[7] है
देखके आलम को ये कहती हैं निगाहें
जो तुझमें है ज़ालिम दुनिया में कहां है

1. उम्मीद का दीपक 2. देखने की इच्छा 3. भाग्य लिखने वाला, भगवान
4. सुन्दरियां 5. सुन्दरी 6. दुनिया का सौन्दर्य 7. जवान

इतने बड़े जहां में, तन्हा[1] सा क्यों हूं
घुटता हुआ दिल में, अरमां[2] सा क्यों हूं
मुझको बनाने वाले! बस इतना बता दे
चहकती बस्ती में, शमशां[3] सा क्यों हूं

सवाल कशमकश[4] के कारवां[5] हैं
जवाब काफ़िलों के रहनुमां[6] हैं
हक़ीक़त[7] है मुश्किलों[8] की ज़मीं[9]
ख़्वाब[10] मंज़िलों[11] के आसमां[12] हैं

1. एकाकी 2. इच्छा 3. मरघट 4. संघर्ष 5. यात्रियों का दल 6. राह दिखाने वाले नेता 7. वास्तविकता 8. कठिनाईयों 9. धरती 10. सपना 11. उद्देश्य 12. आकाश

हक़ीक़त ज़मीं है
ख़्वाब माहजबीं[1] है
बीच में जो तड़पे
वो महज़ आदमी है

मेरे सवालों को बस सवाल ही रहने दो
मेरे ख़्यालों को अब ख़्याल ही रहने दो
गर[2] तेरी जफ़ाओं[3] में है क़ैद हक़ीक़त[4], तो
मेरे ख़्वाबों[5] को बस ख़्वाब ही रहने दो

1. चांद 2 अगर 3 प्रेम में धोखा 4 वास्तविकता 5. सपनों

ख़्वाब मिले, तामीर[1] नहीं
जवाब मिले, तामील[2] नहीं
दूरी और मजबूरी में
बस अश्क़ मिले, तासीर[3] नहीं

ज़िंदगी ने किए सवाल, मैं ख़ामोश रहा
ज़मीर[4] ने किया हिसाब, मैं ख़ामोश रहा
गुनाहों की भीड़ में खो गया मेरा वुजूद[5]
सज़ा ने किया ख़ामोश, मैं ख़ामोश[6] रहा

1. साकार करना 2. व्यवहार में लाना 3. प्रभाव 4. आत्मा, दिल 5. अस्तित्व 6. चुप

अब दिल की बेताबी[1] को बस दिल में ही रहने दो
जहां के अलम[2], उनके सित्म[3], ख़ामोश ही सहने दो
वफ़ा की आबरु[4] के लिए अब तो ये ही बेहतर है
न तो तुम ही कुछ कहो, न मुझ को ही कहने दो

ज़मीर[5] दिया था तो ईमान[6] न देता
ज़लील[7] किया था तो एहसान[8] न देता
जीना बहुत आसां[9] था ए मेरे खुदा
गर दिया था दिल तो अरमान[10] न देता

1. अशान्ति 2. दुख 3. अत्याचार 4. इज़्ज़त 5. आत्मा 6. अच्छी नीयत, सच्चाई
7. अपमानित 8. दयादृष्टी, उपकार 9. सरल 10. इच्छा

तस्वीरे-तक़दीर[1] में रंग-ए-सियाह[2] हूं मैं
ज़मीने-ज़मीर[3] पे सूरते-गुनाह हूं मैं
ऐ कातिब-ए तक़दीर[4]! ये तुझको पता है
बाहर से क्या और अन्दर से क्या हूं मैं

हर याद की आहट पे दिल तेरा भी धड़का होगा
प्यार की आदत से शोला[5] कोई भड़का होगा
ओ मेरे हसीं! है इश्क़[6] पे अपने मुझको यकीं[7]
विसाल[8] की हाजत[9] में दिल तेरा भी तड़पा होगा

1. भाग्य का चित्र 2. काला 3. आत्मा की धरती 4. भाग्य लिखने वाला भगवान
5. चिंगारी 6. प्रेम 7. विश्वास 8. मिलन 9. इच्छा, ललक

मेरा ख़्याल तेरे ख़्यालों में भटका होगा
मेरा सवाल तेरे सवालों में अटका होगा
ज़िंदगी के हसीन[1] ख़्वाबों को सजाने वाले!
हक़ीक़त-ए-हयात[2] ने ज़मीन[3] पे पटका होगा

दिल है, भर आता है, छलक जाता है
उम्मीद[4] के साहिल[5] पे बहल जाता है
मैं कब तलक[6] यूं ही समझाऊं इसको
यादों से टकरा के मचल जाता है

1. सुंदर 2. जीवन की वास्तविकता 3. धरती 4. आशा 5. किनारा 6. तक

तेरी याद हो तो कोई भी मेरे पास न हो
तब किसी का तो क्या अपना भी एहसास[1] न हो
ये दिल धड़के या तड़पे या ज़ार ज़ार[2] रोये
यारब! तब सांस आए या जाए बस आवाज़ न हो

कैसा मुक़ददर[3], कैसी कहानी
कैसा तस्सवुर[4], कैसी जवानी
ये ज़िदंगी तो यूं ही बीत गई
इक़ वीरान[5] सी ही वीरानी[6]

1. अनूभूति 2. लगातार 3. भाग्य 4. विचार 5. उजड़ा हुआ स्थल 6. उजड़ी हुई

कौन किसी को किस ख़्याल से मिलता है
कौन किसी के ज़ख्म प्यार से सिलता है
तमाम उम्र हमें ये एहसास[1] नहीं होता
कि यारों का चमन एतबार[2] से खिलता है

मेरी दुआओं की ताबीर[3] है तू
हुस्नो-सीरत[4] की जागीर है तू
जहां में किसी की भी हो के रहे
मेरी वफ़ाओं[5] की तासीर[6] है तू

1. अनुभूति 2. विश्वास 3. साकार रुप 4. सौन्दर्य और चरित्र 5. निष्ठाओं 6. प्रभाव, असर

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 34

ये बाहों की माला चाहों के घेरे नहीं हैं
ये क़समें, ये वादे, जन्मों के फेरे नहीं हैं
बेख़ुदी[1] के मेले, देख अकेले, जान ले ए दिल!
जिन्हें समझता है तू अपने वे तेरे नहीं हैं

जिधर देखूं, तेरे दीवाने[2] हैं
कुछ जाने तो कुछ अनजाने हैं
जहां में तेरा अंदाज़[3] अजब है
शमां[4] है तू, अनगिन परवाने[5] हैं

1. आत्म-विसर्जन 2. चाहने वाले 3. ढंग 4. दीपक 5. शलभ

तुझे क्या मैं तेरे बग़ैर[1] रहा
चाह रही पर चाहत बग़ैर रहा
न जाने तू ने किस-किस को चाहा
मैं तो इक़ ग़ैर था, बस ग़ैर रहा

तू शमां[2] सा जले कभी सवेरा[3] न हो
इस जहां में रहे, कहीं भी डेरा[4] न हो
मेरे खुदा ने मुझ को बना कर ये कहा
तू सब का बने, कोई भी तेरा न हो

1. बिना 2. दीपक 3. सुबह 4. ठहरने का स्थान

हर ज़िंदगीं कहीं न कहीं पे अधूरी है
खुशियों के बीच ग़मों की लम्बी दूरी है
हर प्यासे लब[1] को यहां जाम नहीं मिलता
इन्सान के लिए ये एहसास[2] ज़रुरी है

सूरत[3] का ही नहीं सीरत[4] का भी लाजवाब[5] है तू
ज़मीं[6] का ही नहीं आसमां का भी माहताब[7] है तू
तेरे एहसास[8] को छूकर ये कहता है मेरा दिल
खुदा ही जाने कितनी दुआओं[9] का जवाब[10] है तू

1. होठ 2. अनुभूति 3. रुप 4. चरित्र 5. अद्वितीय 6. धरती 7. चांद 8. अनुभूति
9. प्रार्थनाओं 10. उत्तर

तेरा शौक़ है सलामत[1], तुझको हया से क्या
तेरा ज़ौक़[2] है सलामत, तुझको जहां से क्या
दिल की लगी या दिल्लगी[3], क्या ग़रज़ है तुझको
तेरा हुस्न है सलामत, तुझको वफ़ा[4] से क्या

वफ़ाओं[5] की राहों में तन्हा[6] पुकारुंगा तुझे
ख़्यालों की बाहों में तन्हा संवारुंगा तुझे
इस बेरहम[7] दुनिया को कभी ख़बर भी न होगी
जब दिल की चाहों में तन्हा उतारुंगा तुझे

1. सुरक्षित 2. आनन्द 3. मनोरंजन 4. निष्ठा, निर्वाह 5. निष्ठा, निर्वाह 6. अकेला
7. दयाहीन

दिल तड़पता ही रहा किसी आवाज़[1] के लिए
पथरा गई आंखे जला के उम्मीद के दीए
हर आहट से टकरा के ये दिल टूट गया
ये थी हमारी ज़िंदगी हम जिए न जिए

तू चांद है, माहजबीं[2] है
बेचैन[3] दिल का यकीं[4] है
जहां में और भी होंगे
मगर तू सबसे हसीं है

1. ध्वनि 2. चांद 3. व्याकुल 4. चैन

जाने किस जन्म का कोई राज़[1] है तू
ज़ुबां[2] की नहीं, दिल की आवाज़ है तू
ज़िंदगी के नगमें जिसपे न गा पाया
वही तरसता हुआ कोई साज़[3] है तू

होने को ज़माने में क्या न हुआ
हुए सभी के कोई हमारा न हुआ
हमने तो मिटा दी ज़िन्दगी अपनी
खुदाया उन्हीं से हक़ अदा[4] न हुआ

1. भेद, रहस्य 2. जीभा 3. संगीत यन्त्र 4. पालन, निभाया

मुझे बर्बाद[1] होना था, तुझे आबाद[2] होना था
मुझे नाशाद[3] होना था, तुझे बस शाद[4] होना था
अब सोचता हूं मैं इस क़दर जीने से क्या हासिल[5]
हुआ तो अब भी वही जो मेरे बाद होना था

बड़ी बेदिली[6] से वो इरादे बदल देता है
और जब चाहे वो कायदे मसल देता है
जब भी देखता है बदलती हवाओं का रुख़[7]
वो अदाओं की तरह वायदे बदल देता है

1. नष्ट 2. बसा हुआ 3. अप्रसन्न 4. प्रसन्न 5. उपलब्ध 6. क्रूरता 7. दिशा

खुद के सिवा किसी को इंसान न समझा
जो चाहा किया कभी अंजाम[1] न समझा
अपनी ही ख़्वाहिशों[2] में बस क़ैद रहे
किसी के दिल का कभी अरमान न समझा

रंज[3] जब भी मिले हैं बेशुमार[4] मिले हैं
अश्क़ों[5] के कारवां[6] बेइख्तियार[7] चले हैं
मैं तरस गया हूं खुशी के एक गुल[8] के लिए
मगर ग़मों[9] के गुलशन[10] बेहिसाब[11] खिले हैं

1. परिणाम 2. इच्छाओं 3. दुख 4. अनगिनत 5. आंसूओं 6. समूह 7. बिना रुके, जिनपे कोई रोक न हो 8.फूल 9. दुखों 10. फूलों का बाग 11. अनगिनत

शिक़वा किसी से क्या, किसी से क्या गिला
हंस कर कबूल[1] कर, जिससे भी जो मिला
तू चाहे या न चाहे, तू माने या न माने
चलता रहेगा यूं ही दुनिया का सिलसिला[2]

मदहोश[3] हूं मैं, बेजान[4] नहीं हूं
इक सोज़[5] हूं मैं, अरमान[6] नहीं हूं
आरज़ू[7] का तेरी पास[8] है मुझको
ख़ामोश हूं मैं, अनजान[9] नहीं हूं

1. स्वीकार 2. चलन, परंपरा, शृंखला 3. मदमस्त 4. जीवन रहित 5. दर्द 6. इच्छा
7. इच्छा 8. आभास, अनुभूति 9. जिसको पता न हो, अज्ञानी

उनसे कोई भी ग़म पाला न गया
हसरतों[1] को दिल से निकाला न गया
अपनी कशमकश[2] में लाचार[3] हैं वो
और हमसे दिल को संभाला न गया

जब तलक हैं तेरी शामें रंगीं, मैं तन्हा हूं तो क्या
जब तलक है तेरी दुनिया हसीं, मैं रुसवा[4] हूं तो क्या
जहां में सब को ज़िंदगी ही सिखाती है ज़िंदगी का सबक[5]
जब तलक है तेरे पांव में ज़मीं, मैं ज़र्रा[6] हूं तो क्या

1. इच्छाओं 2. संघर्ष 3. असमर्थ 4. अपमानित 5. पाठ 6. तिनका, कण

यादों की वादियों[1] में तू क्या-क्या रंग बदलती है
आग़ोश[2] की साज़िशों[3] में तू क्या-क्या ढंग बदलती है
वस्ल[4] के नशे में मदहोश[5] ए ज़ालिम[6]! तुझको नहीं खबर
ख़्यालों की घाटियों में तू क्या-क्या कर गुज़रती है

ये हसरतों[7] की बेटी, बिना तड़पे, बिना रोए जवां[8] नहीं होती
छिपाने से छुप नहीं सकती और सुनाने से बयां[9] नहीं होती
दिलों की रानी, रुहों[10] की रौनक और अफ़सानों की मल्लिका[11]
वो पाक़[12] हक़ीक़त[13] है मुहब्बत जो मिटाने से फ़ना[14] नहीं होती

1. घाटियों 2. आलिंगन 3. मुद्राए 4. मिलन 5. मदमस्त 6. जुल्म करने वाली, प्रेयसी
7. इच्छाओं 8. युवती 9. व्यक्त 10. आत्माओं 11. रानी 12. पवित्र 13. वास्तविकता
14. बरबाद

राहें नहीं बदलती, मुसाफ़िर बदलते रहते हैं
तिजारत[1] नहीं बदलती, ताजिर[2] बदलते रहते हैं
जहां आरज़ूओं के सहरा[3] में, मुहब्बत[4] है खुदा
वहां वफ़ाएं नहीं बदलती, काफ़िर[5] बदलते रहते हैं

मैं तड़पा हूं, अकेला, सहारों से मुझे काम नहीं
मैं धूल हूं सहरा[6] की, बहारों से मुझे काम नहीं
मुझसे बेख़बर अपने साहिल[7] का पता पूछने वालो!
मैं मौज[8] हूं तूफां की, किनारों से मुझे काम नहीं

1. व्यापार 2. व्यापारी 3. मरुस्थल 4. प्रेम 5. भगवान को न मानने वाला 6. मरुस्थल 7. किनारा 8. लहर

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 46

उनको जब भी देखा, ग़ैरों[1] के करीब[2] देखा है
खुद को जब भी देखा, ग़मों के करीब देखा है
अश्क़ों को पी, लबों[3] को सी ये कहता है मेरा दिल
जहां में सब से अलग बस अपना नसीब[4] देखा है

ये नज़र से नज़र का फेर नहीं है
ये लबों[5] से लबों का मेल नहीं है
दिल की लगी को दिल्लगी[6] समझने वालो
ये इश्क़[7] की बाज़ी[8] है, खेल नहीं है

1. अनजाने 2. पास 3. होठों 4. भाग्य 5. होठों 6. मनोरंजन 7. प्रेम 8. मुकाबिला

तू वो शमां नहीं जो मेरी रातों में जलती है
तू वो हया[1] नहीं जो झुकी निगाहों में पलती है
ए नाज़नीन[2]! तू तो फ़कत शराब है बोतल में, जो
इक जाम[3] में नहीं कई पैमानों[4] में ढलती है

हमको हक़[5] है दिल लगाने का
उन्हें हक़ है हमें सताने का
हुस्नो-इश्क़[6] की इन फिज़ाओं[7] में
हमें शक़[8] है घुट के मर जाने का

1. शर्म, लाज 2. कोमलांगनी, कोमल सुन्दरी 3. प्याला 4. शराब का गिलास 5. अधिकार
6. सौन्दर्य और प्रेम 7. वातावरण, आलम 8. सन्देह

ख़्वाब की तामीर[1] से परे कुछ भी नहीं
खुदा की जागीर[2] से परे कुछ भी नहीं
दिलों को इस तरह न जबरन[3] कैद करो
इश्क़ की तासीर[4] से परे कुछ भी नहीं

बिक जाने से इन्कार[5] करता हूं
झुक जाने से इन्कार करता हूं
ए जिन्दगी! तू हमसे करे न करे
मगर मैं तुमसे प्यार करता हूं

1. निर्माण 2. राज्य 3. ताकत से, शक्ति पूर्वक 4. प्रभाव 5. अस्वीकार

तन्हाईयों[1] में तेरी यादों का एहतराम[2] करता हूं
तेरे टूटे हुए वायदों से वफ़ा का जाम[3] भरता हूं
जफ़ाओं के अंधेरों में इस तरह मुझको रुलाने वाले
मैं तड़प-तड़प के ये ज़िंदगी तेरे नाम करता हूं

कोई ईमां[4] से फिर जाता है
कोई गुमां[5] में गिर जाता है
अब यहां वो इंसान कहां, जो
अपनी ज़ुबां[6] पे मिट जाता है

1. अकेलापन 2. स्वागत 3. गिलास 4. विश्वास 5. अभिमान 6. वचन

बूढ़ी यादों के दिल में धुआं होता है
टूटे हुए इरादों में शुबह[1] होता है
तन्हा रात में जब टूटते हैं सितारे
मुझको तेरे वादों का गुमां[2] होता है।

देखकर ज़माने का दस्तूर[3]
हम हो गए अपनों से भी दूर
उनको तो खुदपरस्ती[4] ने किया
हम तो थे बेखुदी[5] में मजबूर

1. सन्देह 2. भ्रम 3. चलन 4. स्वार्थ 5. निस्वार्थ, आत्म विसर्जन

हमसफ़र[1] है संगदिल[2], वफ़ा का असर[3] नहीं
जाने किधर है मंज़िल, मुझको खबर नहीं
खो गई है कश्ती इश्क़ के सैलाब[4] में
दिखा सके जो साहिल[5], वो आई लहर नहीं

वादी-ए-ज़ीस्त[6] में भटक गया हूं मैं
टूटते इरादों में लटक गया हूं मैं
अब न किसी राह न मंज़िल की खबर
किसी की ज़ुल्फों[7] में अटक गया हूं मैं

1. जीवन साथी 2. पत्थर दिल 3. प्रभाव 4. तूफान 5. किनारा 6. जीवन की घाटी
7. बालों, केशों

बहके हुए कदमों में चाहत की रवानी[1] है
महके हुए नग्मों[2] में अश्कों की कहानी है
अंजाम[3] से वाक़िफ़[4] इंसान की फितरत[5] में
ख़ता करने की आदत लहरों सी दीवानी है

ख़्याल किसी का क्यों इस क़दर सताता है
हाल ये दिल का, रह रह के बताता है
किससे कहें, कैसे कहें दिल की कहानी
जो अपना है हमें वो ही रुलाता है

1. गति 2. गीतों 3. परिणाम 4. परिचित 5. प्रकृति

ये मिलन कैसा? ये जुदाई[1] कैसी?
ये चमन कैसा? ये तन्हाई[2] कैसी?
मर मर के गुज़ारी है ज़िंदगी हमने
ये करम[3] कैसा? ये खुदाई[4] कैसी?

वफ़ाएं[5] फ़रियाद[6] करती हैं
जफ़ाए[7] बरबाद[8] करती हैं
आरजूओं[9] की क़ैद से
दुआएं आज़ाद[10] करती हैं

1. बिछुड़ना 2. अकेलापन 3. कृपा 4. भगवान की लीला 5. निष्ठाएं 6. पुकार
7. प्रेम में धोखे 8. नष्ट 9. इच्छाएं 10. स्वतंत्र

मेरे दिल ने ये दी दुआ कि तू शाद[1] रहें
ख़्यालों में क़ैद, जहां में आज़ाद[2] रहे
जब सुनाने लगूं तेरी जफ़ाओं[3] के किस्से
सरे-महफ़िल[4] तू भी मरहबा[5], इरशाद[6] कहे

राहे-वफ़ा[7] में कदम बढ़ते ही रहे
बला-ए-इश्क़[8] के अलम[9] बढ़ते ही रहे
जिस सितमगर के लिए हम मिट भी गये
उसकी जफ़ा[10] के सितम[11] बढ़ते ही रहे

1. प्रसन्न 2. स्वतंत्र 3. प्रेम में धोखा 4. महफ़िल 5. बहुत ख़ूब 6. सुनाईये
7. निष्ठा का मार्ग 8. प्रेम का रोग 9. दुःख 10. प्रेम में धोखा 11. अत्याचार

देखे हैं जो मंज़र[1], मैं भूला नहीं हूं
खाये हैं जो ख़ंजर[2], मैं भूला नहीं हूं
पांवों में है मेरे फरज़ों[3] की बेड़ी
ए ख़्वाबों की मंज़िल, मैं भूला नहीं हूं

तुझ से छुपा कोई राज़ नहीं है
अपने किए पे कोई नाज़ नहीं है
हमने मिटाई है जवानी अपनी
अच्छाई मेरा अंदाज़ नहीं है

1. दृश्य 2. छुरा 3. कर्त्तव्यों

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 56

मेरी पस्ती[1] है ज़माने की गुफ़्तगू[2] के लिए
मेरी हस्ती[3] है दीवाने की आबरु[4] के लिए
ऐ रहमते-तमाम[5]! मैं गुनाह करुं तू हिसाब कर
मेरी ये ज़िंदगी है इसी जुस्तजू[6] के लिए

हाले-बेज़ुबां[7] से वाक़िफ[8] हूं मैं
नाला-ए-नातवां[9] से वाकिफ़ हूं मैं
घबरा के बेबस[10] नज़रों से कहना
'उठा ले आसमां' से वाक़िफ हूं मैं

1. हार 2. बातचीत 3. अस्तित्व 4. इज़्ज़त 5. भगवान 6. संघर्ष 7. गूंगे की व्यथा (न बोल पाने की स्थिति) 8. परिचित 9. दुर्बल की व्यथाएं 10. परवश, लाचार

जो बया[1] न हो उस राज़ का नाम है
टूटती हुई किसी आस का नाम है
यारो! महसूस[2] कर सको तो करो
बेज़ुबानी[3] उस एहसास[4] का नाम है

किसी न किसी को किसी का पास[5] होता है
कोई न कोई किसी का ख़ास[6] होता है
इतने बड़े जहां में सब लगते हैं अपने
जब औरों के ग़म का एहसास[7] होता है

1. व्यक्त 2. अनुभव 3. कुछ न कह सकने की दशा 4. अनुभूति 5. लिहाज़ 6. विशेष 7. अनुभूति

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 58

बंदगी[1] बेअसर[2] हो जाएगी
दिल्लगी[3] बेक़दर[4] हो जाएगी
ग़र न मिला कोई मुकाम[5] हमें
ज़िंदगी बेसबब[6] हो जाएगी

तुझको शहनाईयां ही ख़ास भाती हैं
मुझको तन्हाईयां[7] ही रास आती हैं
खुशियां तो मुझ से रहती हैं दूर-दूर
अब तो रुसवाईयां[8] ही पास आती हैं

1. पूजा 2. प्रभाव रहित 3. मनोरंजन 4. सम्मान रहित 5. मंज़िल 6. लक्ष्य रहित
7. एकांत 8. अपमान

तू कहे अगर तेरी ख़ातिर, तेरे बग़ैर भी जी लूंगा
तेरी खुशियों की ख़ातिर अश्कों का ज़हर भी पी लूंगा
मेरे वादे तुझको याद रहे, तू अपनी कसमें भूल गई
तुझको याद दिलाने से पहले अपने लब ही सी लूंगा

ज़माने की रस्में[1] मुझे रास न आईं
महकी हुई बज़्में[2] मुझे रास न आईं
जज़्बात-ए-बग़ावत[3] में तड़पता ही रहा
सनम तेरी कसमें मुझे रास न आईं

1. रीतियां 2. महफ़िलें 3.विद्रोह की भावना

कभी कोई भी चाहत मुझे रास न आई
कभी कोई भी राहत मेरे पास न आई
न जाने पास से गुज़रे कितने हुजूम[1], पर
तेरे आने की आहट मेरे पास न आई

इस जहां में मुझको किसी से भी कोई गिला[2] नहीं
और मुसीबत[3] के ज़लज़लों[4] में मैं कभी हिला नहीं
पिलाकर शराबे-ग़म[5] तुम क्या आज़माओगे मुझको
मेरी ज़िंदगी भी कोई खुशियों का सिलसिला[6] नहीं

1. भीड़ 2. शिकायत 3. दुःख 4. भूचालों 5. दुःख की शराब 6. शृंखला

जवां[1] आरज़ूओं[2] को दफ़ना[3] के चला हूं
उम्मीदों को कफ़न पहना के चला हूं
कौन मिटा सकता है तक़दीर[4] का लिखा
मैं गुनाहों की सज़ा अपना के चला हूं

ये हवाएं, आसमां[5], ये ज़मीं[6]
ये घटाएं, ये समां[7], ये नमीं[8]
दिले-हिज्रां[9] रोता है देखकर
ये अदाएं[10], ये जवां, ये हसीं

1. यौवन पर आई हुई 2. इच्छाओं 3. मिट्टी में दबाना 4. भाग्य 5. आकाश 6. धरती
7. समय 8. ठंडक 9. विरही हृदय 10. हाव भाव

हमदम[1] नहीं, हमराह[2] नहीं
अब ज़िदगी की चाह नहीं
हम कहते रहते हैं कलाम[3]
मिलती कभी वाह-वाह नहीं

ये ज़िंदगी का सफ़र, कैसा सफ़र, इक़ लम्बा सफ़र है
बन्दगी[4] का असर[5], कैसा असर, अब तलक[6] बेअसर[7] है
बदलती है ज़मीं[8], मिटते हैं निशां[9], रह जाते हैं ब्यां[10]
दिल की लगी का शहर, कैसा शहर, बियाबान[11] नगर है

1. साथ सांस लेने वाला 2. साथ चलने वाला 3. बोलना, व्यक्त करना, शेर 4. पूजा
5. प्रभाव 6. तक 7. प्रभावहीन 8. धरती 9. चिन्ह 10. बोल 11. सूनसान

दिल की लगी यार की यादों का नाम है
ज़िंदगी उम्मीद की सांसों का नाम है
राहे-जुस्तुजू[1] में हिम्मत हारने वालो
मंज़िलें बढ़ते हुए कदमों का नाम है

जख़्मी[2] तन्हाई मेरी तक़दीर[3] बन गई
हर कदम पे रुसवाई[4] ज़ंजीर बन गई
बेताब[5] निगाहों को सूकूं[6] मिलता कैसे
वीरान रहगुज़र[7] मेरी तस्वीर बन गई

1. संघर्ष का मार्ग 2. घायल 3. भाग्य 4. अपमान 5. चिन्तापूर्ण, ग़म वाली 6. शांति 7. मार्ग, रास्ता

दिले-बेताब[1] है, तड़पता रहता है
ये ज़ुल्मों-सितम[2] बेहिसाब[3] सहता है
दास्ताने-दर्द[4] कभी कह नहीं सकता
बेज़ुबान[5] है ये, खामोश रहता है

बन्दगी[6] का कोई सिला[7] नहीं
दिल्लगी[8] में कुछ भी मिला नहीं
शिक़वे[9] हैं, तो बस खुद से हमको
किसी से भी कोई गिला[10] नहीं

1. बेचैन दिल 2. अत्याचार 3. अनगिनत 4. दर्द भरी कहानी 5. गूंगा 6. पूजा
7. जवाब 8. मनोरंजन 9. शिकायतें 10. शिकायत

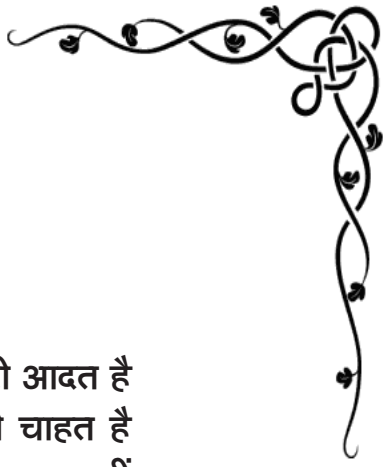

अश्कों का ज़हर पीना ही मेरी आदत है
ग़ैरों के ज़ख्म सीना ही मेरी चाहत है
ये कौन कहता है कि मैं खुदापरस्त[1] नहीं
औरों के लिए जीना ही मेरी इबादत[2] है

भटका हूं मैं राहों में, मगर राहत न मिली
भटका हूं मैं चाहों में, मगर चाहत न मिली
निगाहें बिछाए ता-उम्र इन्तज़ार में गुज़री
कभी सनम के आने की मगर आहट न मिली

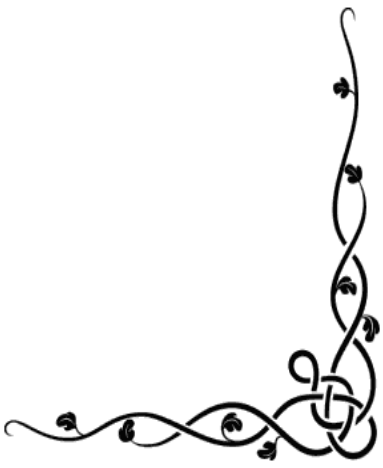

1. भगवान का भक्त 2. पूजा

दिल ने ये पूछा क्यों बेक़रार[1] है तू
लम्हा-ब-लम्हा[2] कितना बेज़ार[3] है तू
ख़्यालों में बसी बेताबी[4] ये बोली
महज़ हक़ीक़त है ये कि इंतज़ार है तू

तू ने जितनी निभा दी, तेरी मेहरबानी[5] है
तू ने जितनी वफ़ा की, तेरी मेहरबानी है
अब क्या है भला मेरे अरमानों की कीमत
तू ने जितनी अदा[6] की, तेरी मेहरबानी है

1. व्याकुल 2. क्षण प्रति क्षण 3. दुखी 4. व्याकुलता 5. कृपा 6. देना

तू क्या है? जवाब को छोड़ दिया, मगर सवाल नहीं छोड़ा
वफ़ा क्या है? अलम[1] को छोड़ दिया, मगर मलाल[2] नहीं छोड़ा
ख़्वाबों में आके, इल्ज़ाम लगा के अब ये कहते हैं वो
तू क्या है? जा छोड़ दिया तुझको, तेरा ख़्याल नहीं छोड़ा

न मरने का पता है, न जीने का पता है
हर लम्हा[3] है क़ैद यहां, हर सांस सज़ा है
क्या राज़ है इसका, क्या किसको बतायें
ये ज़िंदगी तो तब भी थी, अब भी ख़ता[4] है

1. रोग, दुख 2. रंज, दुखड़ा, दोष 3. क्षण 4. पाप, गुनाह

हर लम्हा मेरे दिल में कशमकश[1] जारी है
जिया जो छुप छुप के हरेक लम्हा[2] भारी है
गुनाह तुम लाख छुपाओ, सज़ाएं मिलती हैं
आज इसकी, कल उसकी, फिर अपनी बारी है

इस दिल का क्या है, संभल जायेगा
और वक्त का क्या है, बदल जायेगा
बदली है न बदलेगी तक़दीर[3] मेरी
बदलने को जहां भी बदल जायेगा

1. संघर्ष 2. क्षण 3. भाग्य

जब बदल गए हालात, तेरा बदलना मंज़ूर[1] है मुझको
जब टूट गए जज़बात[2], मेरा तड़पना मंज़ूर है मुझको
पास रहूं, मिलने का तरसूं, साथ जिऊं मरने को तरसूं
गर ये है तेरी सौग़ात[3], तेरा बिछुड़ना मंज़ूर[4] है मुझको

इंसानों का रहमो-करम[5] मुझको जाली[6] सा लगता है
उनका कहना 'मेरे सनम' अब तो गाली सा लगता है
पीते थे जहां मय-ए-वफ़ा[7], खाते थे हम मिलकर कसमें
अब यारों का वो ही हरम[8] मुझको खाली सा लगता है

1. स्वीकार 2. भावनाएं 3. तोहफा, भेंट 4. स्वीकार 5. दया और कृपा 6. नकली
7. निष्ठा की मदिरा 8. अन्तःपुर

किसी ने मजनू तो किसी ने दीवाना कहा
किसी ने दिल जला तो किसी ने परवाना कहा
सनम! मुझको ये गम नहीं कि किसी ने क्या कहा
गम है तो बस यही कि तूने भी अनजाना कहा

यारो उठानी है मेरी मय्यत[1] तो ज़रा हंस के उठाओ
अश्कों में डूब गई ज़िन्दगानी मेरी अब इसको न डुबाओ
ज़िंदगी भर तो हंसे तुम हाल पे मेरे और मैं रोता रहा
हो सके तो मेरी ख़ातिर तुम अब भी ज़रा हंस के दिखाओ

1. अर्थी, लाश

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 71

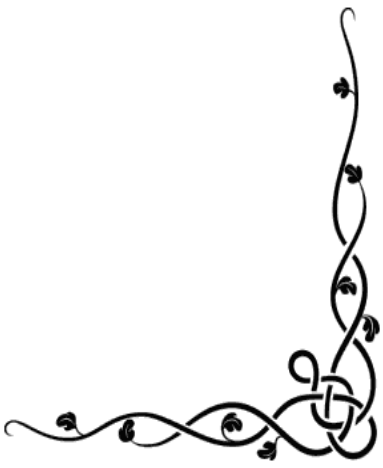

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 72

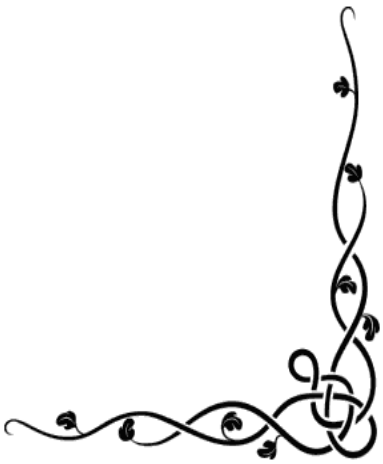

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 73

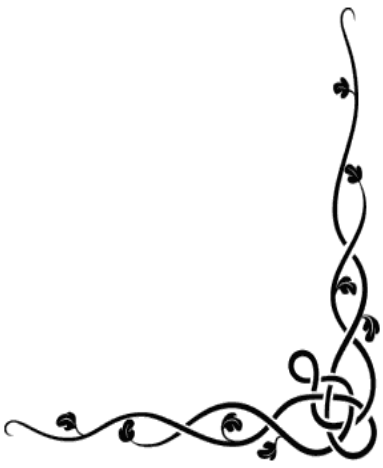

Ehsas-edit-09sept2015_Layout 1 6/1/2004 12:26 AM Page 74